Research Innovator: International Multidisciplinary Peer-Reviewed Journal
ISSN: Print: 2395-4744 www.research-innovator.com ISSN: Online: 2348-7674

उच्च शिक्षा स्तर पर प्रयुक्त शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का छात्रोंद्वारा मूल्यांकन

डा० क्षमा पाण्डेय

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र संकाय, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (मान्य विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा

डा० रीना सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, मासी ,उत्तराखण्ड।

सारांश

वास्तव में किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में विकास एक सीमा तक वहाँ के उच्च शिक्षा में विकास के ऊपर निर्भर करता है।सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का विस्तार शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर है। उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों को सफलतापूर्वक निर्वहन करने की योग्यता को शिक्षण प्रभावशीलता माना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न शिक्षण विधियों के आकलन के लिए छात्र मूल्यांकन का प्रयोग किया गया है।शिक्षण प्रभावशीलता के आकलन में छात्र मूल्यांकन के महत्व को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन को किया गया है। जिसके लिए निम्नलिखित उद्देश्यो का चयन किया गया—*1ण्विश्वविद्याली शिक्षकों द्वारा स्नातक स्तरीय छात्रों को पढानें के लिए प्रयुक्त विभिन्न शिक्षण विधियों को ज्ञात करना। 2ण्सर्वाधिक उत्तम तथा रूचिकर शिक्षण विधि को जानने के लिए छात्रों की प्रतिक्रिया का अध्ययन करना।3ण्छात्रों द्वारा प्रत्यक्षीकृत सर्वाधिक उत्तम शिक्षण विधि का कारण ज्ञात करना।*अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट है कि छात्रों द्वारा विभिन्न शिक्षण विधियों को आवश्यक मानने के प्रति की गयी रेटिंग में सक्रिय शिक्षण विधियों जैसे प्रोजेक्ट, वर्कशॉप, व्यक्तिगत प्रस्तुतिकरण इत्यादि को अन्य विधियों से कम महत्वपूर्ण माना गया जिसका कारण छात्रों द्वारा इन विधियों में रूचि न लेना हो सकता है या इन शिक्षण विधियों के प्रति नकारात्मक चिंतन हो सकता है। इस परिणाम को हम क्वालटर्स (2001) के परिणाम से सत्यापित कर सकते है।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के विकास में वहाँ की उच्च शिक्षा प्रणाली का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता है। वास्तव में किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में विकास एक सीमा तक वहाँ के उच्च शिक्षा में विकास के ऊपर निर्भर करता है। चूँकि शिक्षा के प्रसार में वृद्धि करके तथा शिक्षा स्तर का उन्नयन करके राष्ट्रीय विकास की दर को बढ़ाया जा सकता है और शिक्षा के प्रसार का लाभ तब तक नहीं मिल सकता जब तक शिक्षा गुणवत्तायुक्त न हो। यदि उच्च शिक्षा अध्ययन केन्द्र से निकलने वाले विद्यार्थी गुणवत्तायुक्त मानव संसाधन के रूप में कार्य करते हैं तो राष्ट्र की प्रगति निश्चय व सहज रूप से होगी क्योंकि विद्यार्थियों की उपलब्धि शिक्षक व्यवहार से प्रभावित होती है तथा छात्रों में मनुष्योचित अभिवृत्ति के विकास के लिये शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण कारक होता है। सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का विस्तार शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर है। उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों को सफलतापूर्वक निर्वहन करने की योग्यता को शिक्षण प्रभावशीलता माना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न शिक्षण विधियों के आकलन के लिए छात्र मूल्यांकन का प्रयोग किया गया है।

*मुरे (1994)*ने छात्र मूल्यांकन पर शोध किया और अपने अध्ययन से स्पष्ट किया कि शिक्षक का छात्रों द्वारा मूल्यांकन सामान्यतः विश्वसनीय,

वैध तथा पक्षपातरहित होता है। अतः शिक्षकों का मूल्यांकन छात्र द्वारा करवाना चाहिए।*मकीची (1997)*ने शिक्षक प्रभावशीलता का मूल्यांकन छात्रों द्वारा करने के सम्बंध में अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि शिक्षकों का छात्रों द्वारा मूल्यांकन करना शिक्षक प्रभावशीलता को जानने की सबसे अधिक वैध मापन विधि है क्योंकि छात्र शिक्षकों के प्रत्यक्ष सम्पर्क में रहते हैं इसलिए वे शिक्षक का उचित मूल्यांकन कर सकते है। *फेल्ड मैन (1997)* ने शिक्षकों का छात्रों द्वारा मूल्यांकन पर अपने अध्ययन में प्रदर्शित किया कि बहुत सारे संकायों के सदस्य अपने प्रमोशन और मेरिट निर्णयन के लिए छात्र मूल्यांकन पर निर्भरता के लिए बाध्य हैं। *कैम्पबेल (2005)*ने उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों पर अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य सामुदायिक कॉलेज संकाय के सदस्यों का छात्र द्वारा शिक्षक मूल्यांकन तथा शिक्षक निर्देशन सुधार के विषय में छात्रों की प्रतिक्रिया ज्ञात करनी थी। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष में पाया गया कि–सामुदायिक महाविद्यालय के छात्रों का मानना है कि छात्रों द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन महत्वपूर्ण है, लेकिन अधिकतर छात्र 'छात्र मूल्यांकन' के प्रभाव के विषय में जागरूक नहीं थे। 21 संकाय सदस्य शिक्षक निर्देशन में सुधार के लिए छात्र मूल्यांकन को प्रभावी नहीं मानते इसके अतिरिक्त अन्य सदस्यों द्वारा माना गया कि शिक्षण प्रभावशीलता पर छात्र मूल्यांकन का प्रभाव पड़ता है। *तासी (2005)* ने ताइवान में छात्र रेटिंग के महत्व पर अध्ययन किया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष में पाया गया कि–छात्रों में शिक्षक मूल्यांकन के प्रति सशक्त प्रवृत्ति पायी गयी।चाइनीज छात्र अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान बनाये रखने के साथ–साथ शिक्षक मूल्यांकन के लिए उत्सुक पाये गये। *सिनीज, जुडिथ, कानेगिता (2008)*ने शिक्षक के शिक्षण प्रमोशन और पद पर बने रहने के निर्णयन में छात्रों द्वारा मूल्यांकन करवाने के प्रति संकाय के सदस्यों की प्रतिक्रिया पर अध्ययन किया।इस अध्ययन को करने का मुख्य कारण छात्र मूल्यांकन का वर्तमान में चर्चा का एक मुख्य मुद्दा होना है। दूसरा कारण है शिक्षक प्रभावशीलता के आंकलन में छात्रों द्वारा शिक्षक मूल्यांकन सेट की विश्वसनीयता को कम मानना है, इन कारणों को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन किया गया और निष्कर्ष प्राप्त किया कि अधिकतर संकाय सदस्यों का मानना है कि छात्रों द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन होना चाहिए। *मिन्ट्स (2008)*ने शिक्षक के मानवीय पक्ष महाविद्यालय शिक्षक के पहचान और प्रतिबद्धता पर कार्य किया। यह अध्ययन पार्कर पॉलमर *(1998)* शिक्षक पहचान और प्रतिबद्धता पर आधारित है तथा यह पॉलमर के निष्कर्ष कि एक शिक्षक अच्छा शिक्षण तभी कर सकता जब वह छात्र, विषय और स्वयं से जुड़ा हो जैसे प्रत्यय का अन्वेषण करता है।

*पीटर एवं दिमित्री (2006)*ने छात्रों द्वारा अध्यापक मूल्यांकन पर अध्ययन किया और निष्कर्ष में प्राप्त किया यद्यपि छात्रों द्वारा शिक्षकों के मूल्यांकन का उपयोग विभिन्न संकायों में किया जा रहा है फिर भी छात्रों द्वारा मूल्यांकन एक विवादित उपकरण है। क्योंकि शिक्षकों का मूल्यांकन करने में छात्र पूरी तरह सक्षम नहीं हो सकते उसका कारण छात्रों द्वारा शिक्षकों के किसी विशेष योग्यता से प्रभावित होना हो सकता है। ब्रास कैपं एवं ओरे *(1994)* ने क्लेंम किया की छात्र शिक्षण के विषय में केवल सूचना दे सकता है। बहुत से शोध इंगित करते है की शिक्षक प्रभावशीलता का सही निर्णय छात्र नही कर सकते यद्यपि शिक्षकों की भूमिका निर्वहन में छात्र मूल्यांकन का महत्वपूर्ण योगदान है। फिर भी छात्र मूल्यांकन अनौपचारिक ही है *(रिफ्किन 1995)*।

थेल, एम. ने कहा की छात्र व्याख्यान की गुणवत्ता पाठन एसाइनमेंट और शिक्षक के व्याख्यान की स्पस्टता के विषय मे उत्तर दे सकता है। छात्र अपने अनुभव के साथ अपनी संतुष्टि और असंतुष्टि को अच्छी तरह व्यक्त करनें के योग्य होता है। उसके पास किसी भी शिक्षक के विषय में अपने भावों को व्यक्त करने का अधिकार है और कोई भी व्यक्ति यह रिपोर्ट

नही कर सकता कि कौन सी रेटिंग लाभप्रद सूचनाप्रद सतुष्टदायक या विश्वसनीय है।

शिक्षण प्रभावशीलता के आकलन में छात्र मूल्यांकन के महत्व को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन को किया गया है। जिसके लिए निम्नलिखित उद्देश्यो का चयन किया गया –

- विश्वविद्यालीय शिक्षकों द्वारा स्नातक स्तरीय छात्रों को पढानें के लिए प्रयुक्त विभिन्न शिक्षण विधियों को ज्ञात करना।
- सर्वाधिक उत्तम तथा रूचिकर शिक्षण विधि को जानने के लिए छात्रों की प्रतिक्रिया का अध्ययन करना।
- छात्रों द्वारा प्रत्यक्षीकृत सर्वाधिक उत्तम शिक्षण विधि का कारण ज्ञात करना।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्ययनरत समस्त छात्रों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। अध्ययन के न्यादर्श के लिए कला संकाय के 5 विभागों में अध्ययनरत छात्रों को लिया गया है प्रत्येक विभाग से 10 छात्रों को चयनित किया गया इस प्रकार कुल 50 छात्रों को न्यायदर्श के रूप मे लिया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य की अभिपूर्ति हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इसे दो भागों मे विभाजित किया गया है इस प्रश्नावली में बंद तथा खुले प्रश्नों वाले कथनो को सम्मिलित किया गया। बंद कथन वाले पदों को 1 से 3 विंदु –उत्तम, औसत तथा अति उत्तम पर मापा गया है।

विश्वविद्यालय में अध्यापनरत शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न शिक्षण विधियों को ज्ञात करने के लिए विभिन्न पुस्तकों, शोध ग्रंथ तथा इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न प्रपत्रों का अध्ययन करके ज्ञात किया गया। अन्य उद्देश्यों की अभिपूर्ति हेतु शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण विधियों में सर्वाधिक प्रभावी शिक्षण विधि का अध्ययन करने के लिए छात्रों से प्रश्नावली को भरवाया गया।

प्रथम भाग वाले कथनों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है जबकि द्वितीय भाग के पदोंके विश्लषण के लिए गुणात्मक विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या

उच्च शिक्षा स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकें द्वारा किसी अध्यापन के समय विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। ये शिक्षण विधियां कक्षा में छात्रों की संख्या, पाठ्यक्रम, शिक्षक रूचि, शिक्षण उद्देश्य इत्यादि के आधार पर प्रयुक्त की जाती है। प्रयुक्त प्रपत्र में उच्च शिक्षा के उद्देश्य के अनुरूप शिक्षण विधि का वर्णन किया गया है जो **तालिका – 1** में प्रस्तुत है।

विभिन्न शिक्षण विधियों का मापन

शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न शिक्षण विधियों में सर्वाधिक उपयुक्त शिक्षण विधि ज्ञात करनें के लिए छात्रों द्वारा रेटिंग करवायी गयी, जिसका वर्णन **तालिका –2**में प्रतिशत के रूप में किया गया है।**तालिका** के अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 84 प्रतिशत छात्रों द्वारा व्याख्यान/परिचर्चा विधि को सबसे उपयुक्त शिक्षण विधि माना गया। जबकि व्याख्यान विधि को 76 प्रतिशत छात्रों द्वारा उपयुक्त माना गया है। 64 प्रतिशत छात्रों द्वारा समूह परिचर्चा को उपयुक्त शिक्षण विधि माना गया है।**तालिका** से स्पष्ट है कि सक्रिय अधिगम शिक्षण विधियां जिसमे एसाइनमेंट शिक्षण विधि को औसत रूप से 40 प्रतिशत छात्रों द्वारा उपयुक्त शिक्षण विधि मानी गयी। जबकि व्यक्तिगत प्रस्तुतिकरण, प्रोजेक्ट तथा वर्कशाप शिक्षण विधि को छात्रों द्वारा कम महत्व देते हुए क्रमशः 20, 16, तथा 8 प्रतिशत तक छात्रों द्वारा स्वीकार किया गया कि ये शिक्षण विधियां उनके विषय के अनुरूप है और इन विधियों से पढना उन्हें रूचिकर लगता है।

छात्र प्रतिक्रिया का कारण

कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न शिक्षण विधियों को छात्रों द्वारा उत्तम तथा निःकृष्ट माना गया है जिसका कारण उन्होने निम्नलिखित प्रकार से दिया गया है–

व्याख्यान विधि

इस विधि को छात्रों द्वारा महत्वपूर्ण शिक्षण विधि मानने का निम्नलिखित कारण हैः

- यह बडे कक्षा के लिए उपयुक्त है।
- शिक्षक छात्रों द्वारा उठाये गये सभी प्रश्नों का उत्तर अच्छी प्रकार से देता है।
- छात्र को यदि किसी स्पष्टता की आवश्यकता है तो वह शिक्षक से पूँछ सकता है।
- सभी विंदुओं की व्याख्या
- छात्र अपना सहयोग दे सकता है।
- शिक्षक पूरे विषय को आसान भाषा में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है।
- शिक्षक विषय से सम्बन्धित सभी ज्ञान देता है।
- समय की बचत होती है।
- छ़त्र अपना विचार लेक्चर के अंत में दे सकता है।
- छात्र मूलभूत बात को समझते हैं।
- यह विधि नये विचारों को जन्म देता है।
- शिक्षक विशिष्ट आवश्यकता वाले छात्रों की आवश्यकता को समझता है।

समूह परिचर्चा

- छात्रों द्वारा अधिकतम प्रतिभागिता
- छात्र दूसरे के विचारों को सुनता है और अपनी प्रतिक्रिया देता है।
- आपसी परिचर्चा में छूटे हुए बिदुओं को शिक्षक से विचार–विमर्श कर सकता है।
- छात्र स्वयं पढता है।
- छात्र अपनी विचारों की अदला–बदली करता है।
- आपसी परिचर्चा के बाद जब छात्र अपनी प्रस्तुति देते हैं तो शिक्षक उसे सही करता है।
- छात्र अपने नोट्स बना सकते हैं।
- अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
- छात्रों मे सृजनात्मकता विकसित होती है।
- यह छात्रों मे चिंतन की प्रक्रिया का विकास करता है।
- कानसेप्ट परिचर्चा के बाद स्पष्ट हो जाता है।
- प्रत्येक छात्र अपन विचार प्रस्तुत करता है।

एसाइनमेंट

- यह छात्रों मे स्वतः अधिगम अर्थात विभिन्न पुस्तकों से तथ्यों को संग्रहित करनें की भावना का विकास करता है।
- सक्रिय प्रतिभागिता
- लिखित एसाइनमेंट ज्ञान के संगठन में सहायक है।

व्यक्तिगत प्रस्तुतिकरण

इस शिक्षण विधि को छात्रों द्वारा महत्वपूर्ण माननें का निम्नलिखित कारण हैः

- छात्र अपना प्रस्तुतिकरण देनें से पहले पूरे विषय को समझता है।
- यह छात्रों में आत्मविश्वास की भावना की वृद्वि करता है
- छात्र प्रदत्तों के संकलन के लिए स्व–अध्ययन करता है।
- शिक्षक पर्यवेक्षण को महत्व दिया जाता है।

निष्कर्ष

व्याख्यान/परिचर्चा को छात्रों द्वारा सबसे अधिक उपयुक्त शिक्षण विधि माना गया। इसके पीछे यह कारण हो सकता है कि इस विधि में छात्र अधिक प्रतिभगिता कर सकते है। यह

विषय से सम्बन्धित सभी प्रकार के ज्ञान को छात्रों को उपलब्ध कराती है। इस परिणम को हम कासदों (2000), वोर्दन और गैनसल्स (2000) के निष्कर्ष से सत्यापित कर सकते हैं जिन्होने स्पष्ट किया कि व्याख्यान/परिचर्चा विधि से पढाने का परिणाम अन्य विधियों के अपेक्षा अधिक उत्तम है।

वेनसन, एल., पी., लैट्ज, सी और बर्ड एम. ने साक्ष्य दिया कि व्याख्यान विधि से छात्रों को विषय के प्रति अधिक उद्देलित किया जा सकता है। डेविस (1993), मैकार्थे पी. (1992) ने अपने लेख 'सामान्य शिक्षण विधि' में लेक्चर विधि की विशेषता बताते हुए लिखा कि यह वास्तविक मैटेरियल के साथ प्रत्यक्ष, तार्किक रुप से खुली परिचर्चा तथा चिंतन के रूप में प्रेरित करता और यह बड़े समूहों में अधिगम के लिए सबसे उपयुक्त विधि है। उपर्युक्त तथ्यों को प्रमाणित करते हुए प्रस्तुत अध्ययन में व्याख्यन विधि छात्रों द्वारा द्वितीय सबसें प्रभावी और रूचिकरण विधि मानी गयी।

समूह परिचर्चा शिक्षण विधि को छात्रों द्वारा तृतीय महत्वपूर्ण स्थान देने का कारण इस विधि की सरलता है। यह समूह के प्रत्येक छात्र के अनुभव और विचारों को समक्ष लाता है, और प्रत्येक छात्र को सक्रिय रूप से प्रतिभगिता करने का अवसर देता है। कोचर (2000)ने कहा कि जिस विषय पर लोगों के विचारों में मतभेद थें उसके लिए परिचर्चा विधि सबसे उपयुक्त विधि है।

क्वालटर्स (2001) ने सुझाव दिया कि छात्र सक्रिय अधिगम विधियों से पढ़नें का अधिक पसंद नही करते क्योंकि कक्षा शिक्षण का अधिकतम समय विभिन्न गतिविधियों को करने में व्यतीत हो जाता है और पढाई में ब्यवधान होता है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट है कि छात्रों द्वारा विभिन्न शिक्षण विधियों को आवश्यक मानने के प्रति की गयी रेटिंग में सक्रिय शिक्षण विधियों जैसे प्रोजेक्ट, वर्कशॉप, व्यक्तिगत प्रस्तुतिकरण इत्यादि को अन्य विधियों से कम महत्वपूर्ण माना गया जिसका कारण छात्रों द्वारा इन विधियों में रूचि न लेना हो सकता है या इन शिक्षण विधियों के प्रति नकारात्मक चिंतन हो सकता है। इस परिणाम को हम क्वालटर्स (2001) के परिणाम से सत्यापित कर सकते है।

सुझाव

- उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण विधियों को प्रभावी ढंग से प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाए।
- शिक्षकों को सक्रिय शिक्षण विधियों को रूचिकर ढंग से प्रयोग करना चाहिए।
- कक्षा शिक्षण करते समय शिक्षकों को छात्रों से सहज सम्बंध बनानें का प्रयास करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओर्फन्स एस0ए0 (2008) 'डू गुड ग्रेड्स मेक ए गुड टीचर्स? एन इन्वेस्टिगेस ऑफ द रिलेशनसिप बिटविन टीचर्स' एकेडेमिक पर एण्ड पर्सिव्ड टीचर इफेक्टिवनेस इन साइप्रस,' डीसर्टेशन एब्सट्रैक्ट इन्टरनेशनल, वॉल्यूम 69, नं0 10 अप्रैल, पृष्ठ – 3912–ए।
2. जिम कैम्पबेल एवं अन्य (2004), 'डिफरन्सिएटेड टीचर इफेक्टिवनेस एण्ड टीचर एप्रेजल एसेसिंग टीचर', इफेक्टिवनेस, वॉल्यूम–1, पार्ट–4, पृ. 125–135।
3. तासी, साऊ, हुई (2005) द ओब्जेक्टिविटी ऑफ स्टूडेन्ट रेटिंग्स ऑफ इन्सट्रक्टर्स एमंग ताइवानी स्टूडेन्टस, डिसर्टेशन एब्सट्रैक्ट इन्टरनेशनल, नवम्बर 2005, वोल्यूम 66, नं0 5, पृष्ठ सं0 1675–A

4. फेल्डमैन, के.ए. (1983) रिफलैक्शन ऑफ द स्टडी ऑफ इफेक्टिव कॉलेज टीचिंग एण्ड स्टूडेण्ट रेटिंग : वन कन्टिनियूअस क्वैश्चन एण्ड टू अन्डरसैल्क इश्यूज, जे.सी. स्मार्ट (एड) हायर एजूकेशन : हैण्ड बुक ऑफ थ्योरी एण्ड रिसर्च, न्यूयार्क।
5. पाल्मर,जे. पी. (1997) आइडेन्टिटी एण्ड इण्टीग्रिटी इन टीचिंग , This essay consists of edited excerpts from the Introduction, Chapter I, and Chapter V of Parker J. Palmer's new book, The Courage to Teach: Exploring the Inner Landscape of a Teacher's Life (San Francisco: Jossey-Bass Publishers, 1997),
6. पीटर स्प्रूवेन, डिमिट्री मोरटेलमन (2006) 'टीचर प्रॅफेशनलिजम एण्ड स्टूडेन्ट इवैल्यूएशन ऑफ टीचिंग : विल वेटर टीचर्स रिसीव हॉयर इटिंग एण्ड विल वेटर स्टूडेन्टस गिव हायर रेटिंग', एजूकेशनल स्टडीज, वॉल्यूम 32(2), पृ. 201–214
7. मिन्ट्स, डी.एलिन, एस0 (2008), 'द ह्यूमन डाइमेन्सन्स ऑफ टीचिंगः एक्सप्लोरिंग कॉन्सेप्ट ऑफ कॉलेज टीचर आइडेन्टिटी एण्ड इंटीग्रिटी,' डिसर्टेशन एब्सट्रैक्ट इन्टरनेशनल, वॉल्यूम 69, नं0 10 अप्रैल, पृष्ठ – 3912–ए।
8. मुरे, एच0जे0 (1994) ''कैन टीचिंग वी इम्प्रूव्ड? ब्रोक यूनवर्सिटी, ओनटारियों, कनाडा।
9. मकेची, डब्ल्यू. जे. (1997) 'स्टूडेंट रेटिंग्स : द वैलीडिटी ऑफ यूज', अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, वॉल्यूम (52), पृ. 1218–1225 ।
10. सिन्याज, जे.के. (2008), 'ए स्टडी ऑफ फैकेल्टी पर्सेप्सन ऑफ द यूज ऑफ स्टूडेन्ट इवैल्यूऐशन ऑफ टीचिंग इन फैकेल्टी एसेसमेंट, प्रोमोशन एण्ड रेन्यूर डिसीजनः' डिसर्टेशन एब्सट्रैक्ट इन्टरनेशनल, वॉल्यूम 69, नं0 3, सितम्बर, पृष्ठ 891–A

RESEARCH INNOVATOR

तालिका– 1
विभिन्न शिक्षण उद्देश्यों के अनुरूप प्रयुक्त शिक्षण विधियां

ज्ञान का प्रसार	विचारों और सूचना को ग्रहण करनें की क्षमता का विकास	विचारों और साक्ष्यों को परीक्षण करनें के लिए छात्रों में योग्यता का विकास	विचारों और साक्ष्यों को पैदा करने की योग्यता का विकास	छात्रों की व्यक्तिगत क्षमता का विकास	स्वयं की अधिगम योजना बनानें की क्षमता का विकास
• *व्याख्यान* • *टेक्सट बुक* • *पाठन* • *ज्ञान को नवीनतम करना* • *पुस्तकालय और अन्य अधिगम स्रोतों को प्रयुक्त करने की क्षमता का विकास* • *मुक्त अधिगम सामग्री* • *इंटरनेट का प्रयोग* • *व्याख्यान/ परिचर्चा*	• *इकाई अध्ययन* • *प्रेक्टिकल* • *कार्य अनुभव* • *प्रोजेक्ट* • *प्रदर्षन* • *समूह कार्य* • *वर्कषप* • *परिचर्चा* • *निबंधलेखन*	• *सेमिनार और ट्यूटोरियल* • *पर्यवेक्षण* • *प्रस्तुतिकरण* • *निबंध* • *लिखित कार्य पर प्रतिपुष्टि* • *साहित्य का अध्ययन* • *परीक्षा प्रश्न* • *मुक्त अधिगम* • *स्व मूल्यांकन*	• *षोध प्रोजेक्ट* • *सृजनात्मक रूप से समस्या समाधान के लिये वर्कषाप* • *समूह कार्य* • *क्रियात्मक अधिगम* • *ब्रेनस्टार्मिंग* • *कोचिंग* • *समस्या समाधान*	• *प्रतिपुष्टि* • *अभ्यासात्मक अधिगम* • *क्रियात्मक अधिगम* • *रोलप्ले* • *समूहअधिगम* • *स्वमूल्यांकन*	• *प्रोजेक्ट* • *क्रियात्मक अधिगम* • *वर्कशोप* • *मेंटर* • *स्वतंत्र अध्ययन* • *वर्क प्लेसमेंट* • *लघु शोध ग्रंथ*

तालिका– 2
कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न शिक्षण विधियों पर छात्रों की प्रतिक्रिया

शिक्षण विधि	छात्र संख्या	प्रतिशत
व्याख्यान	38	76
समूह परिचर्चा	32	64
व्याख्यान / परिचर्चा	42	84
एसाइनमेंट	20	40
प्रोजेक्ट	8	16
वर्कशाप	4	8
व्याक्तिगत प्रस्ततिकरण	10	20